वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

दिसम्बर – 2015

* विकास का नियम क्रिश्मे करता है
* अद्वितीय हित अनुराग से सुशोभित रूप
* पाप का यक्ता शत्रु रूप
* पूर्ण सत्य अनुरागी रूप
* झूठ का पूर्ण शत्रु रूप
* आत्मिक ज्योति के यक्ता सूर्य

हम सौभाग्यवान हैं।

मनुष्य साधारणतः अपना सौभाग्य दुनयवी वस्तुओं को लेकर समझता है। जिसके पास अधिक धन, जायदाद, घर, मकान, कारें और अन्य सुख सुविधा की वस्तुएं हैं वह भी अपने आपको सौभाग्यवान समझता है और दूसरे भी उसे हसरत भरी नज़र से देखते हैं। परन्तु इस पृथ्वी पर इनसे सौभाग्यवान वह जन हैं जिन्हें कोई ऐसा रहबर मिल जाए जो उन्हें बुरे कर्मों का ज्ञान दे, उन्हें सद्मार्ग पर चलाने की सामर्थ्य रखता हो, परसेवा, परोपकार का महत्त्व बताकर एक एक जन को वह दूसरों के लिए और अपने लिए वरदान बना सकता हो।

पर इससे भी बड़ा सौभाग्यशाली वह जन है कि जिनका रहबर सत्य और शुभ का पूर्णांग अनुरागी, मिथ्या पाप का पूर्ण शत्रु देवात्मा बन जाए। हम लोगों ने उनको रहबर तो नहीं बनाया, परन्तु हम इस संसार की अरबों की आबादी में महा सौभाग्यवान जन हैं कि जिन्हें देवात्मा के दर का पता लग गया। यह भी एक क्रिश्मा है नहीं तो हमारी क्या औकात है,वह कौन सा विकास का नियम पूरा हुआ है कि जससे ऐसा लासानी सौभाग्य हमें प्राप्त हो गया और हमारे न चाहने पर भी हमारा अथाह हित हो गया। मोटे पापों और मिथ्याओं से बचने के भिन्न हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ है कि हमने नेचर के सब सम्बन्धों में कैसे जीना है। हमें विज्ञान पर आधारित अपनी हस्ती, विशेषकर आत्मा का कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया, जिससे बड़े बड़े विद्वान खाली हैं हम उन बरकतों का संभोग कर रहे हैं, परन्तु जिस देवात्मा के अलौकिक जहूर के कारण हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उसके विषय में हम न कुछ ज्ञान रखते हैं और न जानने का प्रयत्न करते हैं।

अब जबकि देवात्मा सत्गुरू का जन्म दिन हम मनाने जा रहे हैं, तो हम, उनके देवरूप की कुछ झलक जो माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देवात्मा की रोशनी में देखी है पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। इन दिनों में इन लेखों को बार बार पढ़कर हम देवात्मा के अलौकिक रूप को अपनी अपनी योग्यता के अनुसार दर्शन कर सकते हैं और अपनी कुछ न कुछ श्रद्धा बढ़ा सकते हैं और आने वाले महोत्सव की सभाओं से लाभ उठाने के लिए अपने दिलों को तैयार कर सकते हैं।

काश! हम इन दिनों देवात्मा के दर को पाने के सौभाग्य को अनुभव कर सकें।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 11

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | दिसम्बर – 2015 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

विकास का नियम क्रिश्मे करता है

नेचर में विकास का नियम सदा क्रिश्मे पैदा करता है। विकास क्रम का बनना एक अलौकिक क्रिश्मा है। हमारी पृथ्वी का सूर्य से अलग हो कर नये अस्तित्वों अर्थात् पशु परिंदों पौधों पेड़ों से इस पृथ्वी का भर जाना भी एक कमाल क्रिश्मा है।

फिर धीरे धीरे वह समय आ गया, जब पशुओं में से वानर की नसल के विशेष बजुरगों की शाखा से मनुष्य का आविर्भाव हो गया। यह एक अदभुत स्मरणीय युग था जब मनुष्य की उत्पति हुई। पहले मनुष्य की दशा भी पशुओं जैसी ही थी। उस के पास कोई सामान वा सुख सुविधा की वस्तुएँ नहीं थी। कोई मकान, सुई धागा तक नहीं था। मनुष्य पशुओं की भांति ही खाता, पीता वा रहता था। कोई खेती नहीं, कोई शहर वा गांव नहीं थे, कोई सड़क, फुलवाड़ी नहीं थी, कोई रेल वा बस वा कार तो क्या साईकल वा रेहड़ा तक नहीं था, कोई दिया बाती नहीं थी। परन्तु मनुष्य को जो विकासशील बुद्धि शक्ति मिली, उसने अपने क्रिश्मे दिखाने आरम्भ कर दिए। मनुष्य ने इस क्रिश्माई शक्ति से इस पृथ्वी पर नई लीला दिखानी आरम्भ कर दी। उसकी यह नई मानसिक शक्तियां ज्यों ज्यों विकसित होती गई, तो यह पृथ्वी घरों, महलों, नगरों, शहरों, बागों, फलों फूलों, चारगाहों, मशीनों, कारखानों, स्कूलों, किताबों कालिजों, यूनिवर्सिटियों, कोर्ट कचहरियों, फौजों, पुलिस और अन्य अस्तित्वों से सुसज्जित हो गई। यदि मनुष्य इन विशेष शक्तियों वा योग्यताओं को प्राप्त करके जन्म न लेता, तो इस पृथ्वी की वही हालत होती जो हैवानों के समय विरान वा ऊबड़ खाबड़ थी। कहां मनुष्य की पहली बेबसी वा बेकसी की आरम्भिक अवस्था और कहां उसकी आज की सभ्य अवस्था, दोनों में कितना अन्तर! यह सब लीला मनुष्य की विशेष मानसिक शक्तियों के भण्डार की बदौलत है। यह सारी लीला विकास क्रम के क्रिश्मों को दर्शाती है।

हैवानों और मनुष्यों में बुनियादी अन्तर :- बेशक यह सच है कि इस दुनियां कि कई हैवानों के शरीर कितने ही पक्षों में मनुष्य के शरीर से मिलते जुलते है, परन्तु उनके दिमागों की बनावट में बहुत बड़ा अन्तर है। यह अन्तर बुनियादी है। मनुष्य की मानसिक शक्तियां उन्नतशील हैं, परन्तु हैवानों की उन्नतशील नहीं। यह अन्तर दोनों को भिन्न श्रेणियों के जीव बना देता है। एक भी ऐसा हैवान नहीं जिसमें मनुष्य जैसी शक्तियां हों, इसलिए मनुष्य जो नेचर के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वह कोई भी हैवान नहीं कर सकता।

क्या मनुष्य को अर्विभूत करके और उसका विकास करके विकास क्रम चुप हो गया, रुक गया, उसने आगे कोई काम नही किया? विकास का क्रम सदा

जारी रहता है, वह कभी रुक नहीं सकता, उसको नेचर की कोई शक्ति रोक नहीं सकती।

अब प्रश्न यह है कि जैसे विकास के क्रम में हैवानों और मनुष्यों की जीवनी शक्तियों में उपरोक्त बुनियादी अन्तर है और मनुष्य पशुओं से मूलत: भिन्न है। उसी प्रकार मनुष्य जगत में भी किसी हस्ती में ऐसी अलौकिक और उच्चतम शक्तियों का विकास होना आवश्यक था, जिसकी शक्तियां मनुष्य मात्र से भिन्न हों।

इस प्रश्न के उत्तर में हम यह बताना चाहते है कि नेचर के अपने विकास क्रम में भगवान देवात्मा में जिन विशेष और सर्वोच्च शक्तियों का विकास हुआ है, उनके अर्विभाव से पहले किसी भी मनुष्य के भीतर उनका विकास नहीं हुआ।

जिस प्रकार मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियों की विशेषता के कारण अपने से नीचे के कुल जानदार संसार से अलग पहचाना जाता है, वैसे ही भगवान देवात्मा अपनी इन विशेष और सर्वोच्च शक्तियों के स्वभाव के कारण मनुष्य जगत के कुल मनुष्यों से अलग पहचाने जाते हैं और पहचाने जा सकते हैं।

भगवान देवात्मा की अद्वितीय रूहानी शक्तियों को देव शक्तियां कहते हैं। इन देव शक्तियों से समस्त संसार सदा वंचित है।

सारे संसार से भगवान देवात्मा को भिन्न वा महान बना देने वाली उनकी देव शक्तियां, जो नेचर के विकास क्रम में उनके भीतर पैदा हुई है, वह ये है :-

1. **हित अनुराग :** नेचर के प्रत्येक विभाग के सम्बन्ध में हर प्रकार की बेहतरी, भलाई या शुभ या हित के देखने वा लाने के लिए अपूर्व हित अनुराग।

2. **अहित वैराग्य :** नेचर के प्रत्येक विभाग के सम्बन्ध में विशेष कर मनुष्य जगत में मनुष्यों की ओर से जिस जिस प्रकार के अन्याय या अत्याचार वा जुल्म या औरों के अधिकार हनन, क्या भिन्न भिन्न धर्म अस्थापकों की शिक्षा और क्या मनुष्य के नीच भावों के कारण जिस जिस प्रकार की बुराईयां फैली हुई हैं और जिस जिस प्रकार के सच्चे पाप वा अपराध हो रहे है, उन सब प्रकार के अहितों और बुराईयों के लिए पूर्ण घृणा अर्थात् नफरत!

सत्य अनुराग : कुल नेचर और उसके प्रत्येक विभाग और उससे सम्बन्धित प्रत्येक बात के विषय में जो कुछ सत्य है, उसके जानने वा प्रचार करने के लिए पूर्ण अनुराग।

असत्य विराग : नेचर की सत्य घटनाओं और उसके नियमों के विरूद्ध मनुष्य जगत में धर्म के नाम पर जो जो झूठी शिक्षा, झूठी रस्मों, गीतों या अनुष्ठानों और उसमें किसी नाम पर भी जो जो झूठे अमल जारी हैं, ऐसी सब प्रकार की मिथ्याओं वा झूठों के प्रति पूर्ण घृणा।

"यही वह चार प्रकार की रुहानी देव शक्तियां है कि जिनका भगवान देवात्मा के भीतर नेचर के विकास क्रम से जहूर हुआ है और विकास हुआ है और जिनको प्राप्त करके और विकसित करके वह सत्य देव या सच्चे देवरुपधारी, देवात्मा हैं।"

"यही वह अद्वितीय और विशेष देव शक्तियां हैं कि जिनका भगवान देवात्मा के आर्विभाव से पहले किसी कहलाने वाले देवी देवता, ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म या उनमें से कहलाने वाले किसी अवतार या कहलाने वाले खुदा, अल्ला, वाहिगुरु या किसी कहलाने वाले गुरु या हाजी या पैगम्बर या पीर या वली या ऋषि या मुनि या महात्मा या बुद्ध या र्तीथकर, या जिन्न या भक्त या जोशी या सिद्ध आदि में जहूर नहीं हुआ और नेचर के विकास क्रम में उसके अपने अटल नियमों के अनुसार उनमें से किसी में भी उनका जहूर होना सम्भव नहीं था।

अद्वितीय हित अनुराग से सुशोभित रूप – 2

देवात्मा का प्रकाश इस युग की (विकास क्रम की) सबसे विचित्र, महानतम, परम सुन्दर, परम हितकर और परम आवश्यक अद्‌भुत घटना है। देवात्मा का देव रूप विकास क्रम का एक अति अनोखा क्रिश्मा है। मानव जगत के लिए और उसके द्वारा, नेचर के चारों जगतों के लिए परम हितों का अति अनोखा स्त्रोत है। ऐसे देव रूप को जानना और उससे सम्बन्धित होना, मनुष्य का सर्वोच्च सौभाग्य है और उससे वंचित रहना, मानव जीवन का सबसे बड़ा घाटा और दुर्भाग्य है।

देवात्मा के अद्वितीय देवरूप को जानने से पहले (वैसे तो प्रत्येक प्रकार के सत्यज्ञान के लिए) मनुष्य को सत्य नेचर का मोटा ज्ञान और नेचर के कार्यशील, विकास क्रम का ज्ञान होना आवश्यक है। नेचर के सत्य रूप और नेचर के भीतर जारी उसके अटल विकास क्रम पर सच्चा विश्वास होना आवश्यक है। जिस जन की विकास के नियम पर कोई आस्था नहीं वह नेचर के किसी विषय पर भी सत्य ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ्य है। देवात्मा का देवरूप तो बिल्कुल ही समझ आना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

नेचर के विकास क्रम ने मनुष्य जाति का विकास करके तीन प्रकार के अजूबे पैदा किए हैं। मनुष्य बुद्धि का विकास होने से विज्ञान पर अधारित अजूबे। परत्व सम्बन्धी भले वा सात्विक भावों का विकास करके, दूसरों के लिए जीने वाले महान और सात्विक पुरुष, विशुद्ध परोपकारी, मानवता के सितारे पैदा किए हैं। महान लेखक, कवि, दार्शनिक, साहित्यकार और कोमल कलाओं में माहिर, नेचर के मानवीय भावात्मिक विकास की उपज या अजूबे हैं।

जैसे मनुष्य के भीतर, उन्नतशील बुद्धि के पैदा होने वा उसके विकास के साथ मनुष्य के अस्तित्व, विशेषकर कुल पशु जगत से एक अलग पहचान हो गई है, उसी प्रकार देवात्मा के सर्वोच्च भावों अर्थात् शुभ और सत्य के प्रति अनुरागों के पैदा होने से देवात्मा की सारे मनुष्य मात्र से एक पूर्ण अलग पहचान हो गई है। देवात्मा की हस्ती मनुष्य जगत से भिन्न हो गई।

मनुष्य का स्वरुप सुख अनुरागी है, दुख वैरागी है। सब मनुष्य सुखों से प्यार की और दुखों से वैराग्य की प्रकृति लेकर जन्म लेते हैं और सदा सुख दुख की सीमा के भीतर ही रहते हैं। सुख की डोर से बन्धे रहने के लिए प्रत्येक मनुष्य बाध्य है। मनुष्य सुख का प्रेमक है। इसलिए पाप और झूठ का स्त्रोत है। मनुष्य चाहे कितना भी महान हो जाए, सात्विक वा उच्च हो, उसका जीवन पाप और झूठ से थोड़ा बहुत कलंकित वा दागदार होता है। मनुष्य नेह कलंक नहीं हो सकता। मनुष्य सुख, झूठ वा पाप का आशिक है, इसलिए वह अपनी और दूसरों की हानि करने के लिए मजबूर है। अपना शत्रु और दूसरों का शत्रु बना रहता है। अनेक योग्यताओं खूबियों और सात्विकता रखकर, मनुष्य की जड़ सुख के स्त्रोत से ही जुड़ी रहती है, इसीलिए उसका किसी न किसी अंश झूठ और पाप का स्त्रोत बनना निश्चत बात है।

नेचर ने मनुष्य से बिल्कुल भिन्न देवात्मा की भावानात्मक बनावट बनाई है। देवात्मा के भीतर सुख अनुराग नहीं आया, किसी सुख या सुखदायक अस्तित्व या पदार्थ के दास नहीं बने, देवात्मा किसी सुख के पक्षपाती नहीं बने। सुख अनुराग की मलिनता से, पाप और झूठ से, देवात्मा की हस्ती पूर्ण पाक, साफ, पवित्र वा निर्मल है। जहां प्रत्येक मनुष्य सुख अनुराग का कैदी है, वहा देवात्मा प्रत्येक सुख लालसा से पूर्णत: मुक्त वा

आजाद हैं।

इस सब का कारण है देवात्मा के भीतर सुख के स्थान पर शुभ अनुराग या हित अनुराग का प्रगट होना। देवात्मा के शुभ अनुराग ने उनकी एक अलग शान वा पहचान बना दी है।

मानव जगत में पहली बार देवात्मा के आत्मा में इस निराले हित अनुराग वा शुभ अनुराग के उन्नतशील बीज, नेचर के विकास क्रम में आ गए। मनुष्य जाति का एक शिरोमणि जीव प्रगट हो गया ।

हित वा शुभ अनुराग क्या हैं, इसका ज्ञान पाना मनुष्य का जहां परम सौभाग्य है, वहां मनुष्य के लिए परम कल्याणकारी भी है। हित अनुराग या शुभ अनुराग सम्बन्धी अधिक ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य का सर्वोच्च कर्तव्य है। क्योंकि शुभ अनुराग के भीतर मनुष्य के हितों का खज़ाना छुपा हुआ है।

अपने हित अनुराग के सम्बन्ध में देवात्मा ने इस प्रकार फरमाया है : –

"मेरे भीतर बाल्य काल से पहले पहल हित विषयक असाधारण और अति विचित्र अनुराग का विकास आरम्भ हुआ और मैं उसकी प्रबल प्रेरणा के अनुसार अपनी प्रत्येक ऐसी क्रिया के लिए कि जो क्रिया मुझे अपने या किसी और कि लिए हितकर प्रतीत होती थी, उसका साथ देने और जो क्रिया मुझे अपने वा किसी और के लिए अहितकर प्रतीत होती थी, उनका साथ न देने के लिए बाध्य अनुभव करने लगा।"

हित बोध, हित अनुराग का नया बोध मनुष्य जगत में फूट पड़ा। कमाल हो गया। यह अति असाधारण और विलक्षण बोध है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आत्मा के भीतर इस हित बोध के आने से, मानों पृथ्वी धन्य धन्य कह उठी। आकाश धन्य धन्य हो गया। इससे मानवता के विकास में, विश्व इतिहास में एक बिल्कुल ही अनोखे युग का प्रतीक प्रगट हो गया। देवत्व के राज का इस हित अनुराग की उपज के साथ विश्व में सूत्रपात हो गया।

हित का उपरोक्त बोध धीरे – धीरे विकास पा गया, वह नेचर के चारों जगतों के साथ जुड़ गया। देवात्मा नेचर के चारों जगतों के सम्पर्क में आने पर उनके हित के अनुरागी बन गए। वाह! नेचर ने चारों जगतों की भलाई के अजब पूर्ण प्रेमी और आशिक पैदा कर दिए।

बच्चे की भान्ति सुख अनुरागी और सुखों का कीट और बन्धुआ मनुष्य अपनी ही भलाई और अपने ही शुभ व अपने हित से पूर्ण अबोधी वा अनजान है। वह सुख लालसाओं में ही अपनी भलाई देख रहा है। वह अति बेसुध वा अन्धकार वासी है। अपने ही नाश को प्रेम करता है। उसको, उसका सर्वपक्षीय हित देखने के लिए और उसका हित करने के लिए एक अति महान रुहानी मां की अत्यन्त आवश्यकता है। नेचर ने देवात्मा को चारों जगतों के हित करने के लिए एक विचित्र रूहानी मां के रूप में प्रगट किया है।

जो सुख मेरा नाश करते हैं, मै उन्हें ही अच्छा समझता हूँ, उन्हें चाहता हूँ, उनके विरूद्ध कुछ सुनना नहीं चाहता, उनके विरूद्ध सुनना नागवार वा दुखदायी अनुभव होता है, उनके विरूद्ध कहने वालों को, मेरे सुखो ं पर हाथ पाने वाले को मैं घोर घृणा करता हूँ, उनको काटने दौड़ता हूँ। यह मेरी प्रकृति है देवात्मा मेरे प्रकृत हित को देखते हैं, मेरा प्रकृत हित चाहते हैं, जो मेरे हित के लिए वह व्याकुल हैं, जिस के प्रति मैं पूर्ण बेसुध हूँ, मेरे अपने हित के प्रति देवात्मा की जान को बनी हुई है और बनती है, वह मेरे हित के लिए पूर्ण निस्सार होने के लिए व्याकुल हैं, मुझे न अपना आत्म हित और न हानि कुछ दिखाई देती हैं, इसलिए मुझे न

किसी हितकर्ता की आवश्यकता है और न मुझे कोई अपना हितकर्ता दिखाई देता है। मेरी प्रकृत अवस्था ने या समूचे समाज की हालत ने देवात्मा के काम को कितना कठिन कर दिया है, उसको हमारी अन्तहीन खुमारी देखने नहीं देती। पूर्ण हित अनुरागी की अजमत की भी कोई सीमा नहीं और मानवता की ओर से उदासीनता या बेकदरी की भी कोई सीमा नहीं।

हित अनुरागी के रूप की महानता, सुन्दरता और हितैषिता शब्दों में बख़ान नहीं की जा सकती।

देवात्मा शुभ की मूर्त हैं, वह शुभ personified हैं। उनकी अद्वितीय पाक जात के भीतर शुभ ही शुभ है, इसके विरूद्ध कुछ लेश मात्र भी नहीं।

देवात्मा हितों के चश्में हैं। वह सदा भौतिक जगत का हित लाने के लिए सोचते प्रचार करते, क्रिया करते वा लिखते हैं। वह वनस्पति जगत के हित के लिए पूर्ण यत्नशील है। वह मानव हितें के पूर्ण दिवाने हैं। हर समय हित उनके देवरूप से झरने की तरह बहता है।

ऐसे हित अनुरागी ने चारों जगतों के सम्पूर्ण हित के लिए अदभुत सामान संजोए हैं। हमारे लिए अद्वितीय हितकर सचाईयों से भरपूर ग्रन्थों की रचना की। हमारे नाना हितों से भरसक सहायक महान सम्बन्धी प्रदान किए। झरने के पानी की भांति अपने अद्वितीय, हमारे हितों के पूर्ण रक्षक प्रभावों की प्राप्ति की विधियां प्रदान कीं। हमारे पूर्ण हित के लिए पूर्ण कारगार वातावरण वा अनोखा मार्ग दर्शन दिया।

हमें दुख, मौत और पूर्ण नाश के मुसाफिरों को हमारे हित के अनुरागी ने बार बार अपना सीना फाड़ फाड़ कर अद्वितीय हित का मार्ग दर्शाया।

ऐसे शुभ अनुरागी को, हित अनुरागी को कैसे भी श्रद्धा अर्पित करें, परन्तु पूर्ण न्याय नहीं कर सकते।

"अहित विषयक पूर्णाग वैराग्य शक्तियां

अहित विषयक पूर्णाग वैराग्य शक्तियों को प्राप्त होकर आत्मा : –

1. विश्व के प्रत्येक विभाग के सम्बन्ध में अपनी तरफ से नीच गति से विरत रहता है। और अपनी तरफ से किसी अस्तित्व की कोई हानि नहीं करता।

2. अपने ज्ञान और अपनी सामर्थ्य के अनुसार, जिस जिस अस्तित्व की जहां तक किसी नीच गति से रक्षा कर सकता है, वहां तक उससे उसकी रक्षा करने के लिए पूर्ण यत्न और संग्राम करता है।"

देश वाणी

"सुख अनुरागी मनुष्य के लिए नाना अवसरों में शुभ का साथ न देना, किन्तु उसका विद्रोही वा बैरी बनना और बैरी बनकर उसका गला घोंटना और अशुभ का साथी वा अशुभ परायण बनना अनिवार्य है। सुख अनुरागी बनकर प्रत्येक मनुष्य के लिए न केवल अपने आत्मा, किन्तु अपने शरीर की गठन के सम्बन्ध में भी हानिकारक बनना लाज़मी है। इसीलिए मनुष्य स्वाद सुख, काम सुख, नाश सुख, आलस्य सुख आदि का अनुरागी वा लालसी बनकर अपने शरीर की गठन के सम्बन्ध में जिस जिस प्रकार के दुराचार वा अमिताचार करता है, वह पशु जगत के जीवों में पाए नहीं जाते।"

पाप का यक्ता शत्रु रूप – 3

(अशुभ का पूर्ण वैराग्य)

देवात्मा के आत्मा में अद्वितीय भावों का विकास हुआ है। जैसे पहले बताया गया है कि उनके हृदय में चारों जगतों के पूर्ण हित, भलाई के अति प्रबल विचित्र अनुराग का विकास हुआ है। नेचर के नियमानुसार जहां अनुराग होता है, वहां उसके विरोधी पक्ष के प्रति वैराग्य का होना एक अति आवश्यक बात है। जहां सफाई का इश्क है, वहां गन्दगी और मैल के प्रति वैराग्य लाज़मी बात है । जहां ईमानदारी का इश्क है, वहां बेईमानी, चोरी, ठगी के लिए घृणा आवश्यक है। जिस मात्रा से अनुराग बढ़ता है। उसी मात्रा में वैराग्य स्वयं ही बढ़ जाता है। इस नेचर के अपने अटल नियमानुसार, देवात्मा के आत्मा के भीतर शुभ अनुराग के विकसित होने से अशुभ वैराग्य, पाप वैराग्य, बुराई वा बदी वैराग्य, प्रत्येक नीचता वा पिशाचत के प्रति वैराग्य का पैदा होना और विकसित होना आवश्यक है।

इसलिए देवात्मा जहां सारे मनुष्य जगत के भीतर यक्ता शुभ अनुरागी हैं, वहां वह मनुष्य मात्र में यक्ता अशुभ, अहित वा पाप वैरागी हैं। मानव इतिहास में शुभ अनुराग वा अशुभ वैराग्य ने पहली बार नये रूप में विकास पाया। जैसे देवात्मा का शुभ अनुराग छलांगें लगाकर बढ़ता रहा है और प्रबल होता गया, उसी प्रकार ही अशुभ वैराग्य वा पाप वैराग्य भी बढ़ता गया और बलशाली बनता गया।

देवात्मा के भीतर हर प्रकार की बुरी चिन्ता, सोच के प्रति हर प्रकार के बुरे, खराब बोल या शब्द के प्रति और हर प्रकार की नीच गतियों के प्रति घोर घृणा, नफरत या ग्लानि पैदा हो गई।

देवात्मा इसलिए हर प्रकार के पाप के विरोधी बन गए। देवात्मा के भीतर हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म पाप के प्रति भी वैर भाव पैदा हो गया।

देवात्मा के भीतर हर पाप के प्रति घोर विकर्षण और दूरी पैदा हो गई।

हर पाप वा बुराई के लिए देवात्मा के भीतर घृणा पनप गई।

उक्त स्थिति अनुसार देवात्मा के लिए प्रत्येक बुराई या प्रत्येक पाप का पूर्ण वा पक्का शत्रु होना लाज़मी हो गया। वह मानव समाज में एकमात्र पाप के शत्रु बन गए। उनके लिए प्रत्येक पाप के विरुद्ध टक्कर लेना, प्रत्येक पाप को कुचलने के लिए कटिबद्ध होना आवश्यक हो गया।

देवात्मा संसार में ऐसे पाप वा बदी के कट्टर शत्रु प्रगट हो गए, जैसे कि और किसी भी गुरु, पीर, पैगम्बर, अवतार या कहलाने वाले देवी देवता के भीतर हर प्रकार के पाप के प्रति कट्टर शत्रुता को प्राप्त होने का नेचर में अधिकार प्राप्त नहीं हो सका।

अवतारों, गुरूओं, पीरों या पैगम्बरों या अन्य देवी देवताओं के जीवन का निरीक्षण पुकार पुकार कर बताता है कि उन्होंने एक या दूसरे समय, पाप का या बदी का साथ दिया या उनके जीवन में पाप का लेश साफ झलकता है।

उनमें से कई मांसाहारी थे, शिकारी थे, शिकारी परिंदे या अन्य जानवर रखते थे, उन में से किसी ने पशु पंछियों को खाने, उनकी बलि देने या अपने विशेष धार्मिक ग्रन्थों में उनकी शिक्षा दी है। एक एक धार्मिक महान हस्ती ने तीर्थो के स्थानों पर मांस की हांडी पकाई। बहुत कम संख्या को छोड़कर सारी मानव समाज को धर्मो ने ही मांस भक्षी बना दिया।

उनमें से कई नशे का सेवन करते

थे – नशेपीना, धार्मिक अंग बन जाता था या आज भी है। कोई अफीम, कोई भंग, कोई धतूरा, कोई सुलफा, गांजा, कोई तम्बाकू, शराब आदि का खुलेआम सेवन करते हैं।

कोई धार्मिक संस्थापक नौ नौ, कोई चार चार पत्नियां, किसी समय रखते थे। कोई किसी की लड़की उठाकर ले जाने में कोई अधर्म नहीं समझते थे। महात्मा बुद्ध जैसे रोशनी के मिनार ने भी स्वयं स्वीकार किया है कि जंगल में एक नौजवान सुन्दरी उनके लिए दूध लेकर आती थी। उनका मन उसके सम्बन्ध में विकार से भर जाता था। वह कुछ समय उधेड़ बुन में रहे, फिर उनकी सात्विकता ने उन्हें बदचलनी के घोर पाप से बचा लिया। बड़े बड़े ऋषि मुनि अपनी गिरावटों के लिए प्रसिद्ध हैं।

कबीर जी ने चोर को पुलिस से बचाने के लिए अपनी पुत्री के साथ सोने के लिए कह दिया।

गुस्सा, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष सब पाप के स्त्रोत हैं। धार्मिक हस्तियां इनसे मुक्त नहीं थी। उनके द्वारा दूसरों के नाश के लिए दिए गए श्राप मशहूर हैं।

अवतार, देवी, देवता और धर्मो के संस्थापक पाप जीवन से पूर्णत: मुक्त नहीं थे। और न ही हो सकते थे। उनमें से कईयों ने पाप कर्मो की शिक्षा दी है। स्वयं पाप के प्रति घृणा न रखकर, वह ऐसी शिक्षा देने के लिए मजबूर थे।

मानव जगत की उपरोक्त अवस्था के समय नेचर ने अपने विकास क्रम के अन्दर देवात्मा के रूप में ऐसी लाजवाब हस्ती पैदा कर दी थी जो न केवल पाप की यक्ता दुश्मन थी, बल्कि स्वयं भी पाप से पूर्ण निर्मल, पवित्र वा मुक्त थी। नेचर में अब तक कोई भी पूर्ण पाप मुक्त हस्ती प्रगट नही हुई थी, कोई नेहकलंक व्यक्तित्व नहीं पैदा हुआ था। देवात्मा की पूर्ण पाक, साफ जात को प्रगट करके नेचर ने अपने विकास क्रम का अद्वितीय शाहकार प्रगट कर दिया, जिसके साथ मानों यह धरती धन्य धन्य हो उठी, आकाश सरशार हो गया। मानवता को पूर्ण नया, अद्वितीय और यक्ता आदर्श प्राप्त हो गया। देवात्मा जैसी पूर्ण पाप से निर्मल या पाक, सब जगतों के प्रति पूर्णता हानि रहित और पूर्ण हितकर, पूर्ण आदर्श हस्ती को पाकर मानव जगत ही क्या चारों जगतों के हित का, हानि से सुरक्षा का अद्वितीय सामान प्रगट हो गया। मानव जगत के इस महा सौभाग्य को जितना भी अनुभव किया जाए कम है।

वाह! नेचर ने देवात्मा के विकास क्रम में कैसे अति अनोखे, सुन्दर और अति पवित्र रूप का सृजन कर दिया।

ऐसा अशुभ या पाप का वैरागी, पाप विरोधी, पाप या अशुभ का वैरी – पाप के प्रति पूर्ण विकर्षण की मूरत, पाप को पूर्ण घृणा करने वाला, पाप को पूर्णत: कुचलने वाला, पापों से अधिकारी आत्माओं को मुक्त करने वाला लासानी देवरूप संसार में पहली बार रोशन हो गया।

जैसे ऊपर बताया गया है कि सारे का सारा मनुष्य मात्र अपनी मूल प्रकृति के कारण सुख अनुरागी है, सुख परायण है, पाप परायण है, वहां देवात्मा के भीतर कोई सुख अनुराग पनप ही नहीं सकता था। जैसे सूर्य में पानी की बूंद अटक ही नहीं सकती, देवात्मा के अद्वितीय, पूर्ण पाप या घृणा रहित आत्मा के भीतर किसी सुख लालसा के प्रति कोई रत्ती भर भी रुचि नहीं हो सकती थी। क्योंकि सुख लालसा के प्रेम से ही घोर पापों की उत्पति होती है। नीच सुख अनुराग ही पाप के स्त्रोत है। परन्तु देवात्मा जो केवल मात्र ऐसी हस्ती है जो सुख अनुराग से पूर्ण मुक्त होने के कारण

पाप से भी पूर्ण मुक्त थे। सुख अनुरागों से मिथ्या की भी उत्पति होती है। इसलिए देवात्मा सब प्रकार की मिथ्या से भी मुक्त थे। वह न कभी किसी मनुष्य के अनुरागी बने, और न ही पाप और मिथ्या के साथी बने।

वह दुनयवी किसी भी सुख, मनुष्य, पशु, पौधे, धन धरती, घर या किसी पदार्थ के अनुरागी नहीं बने।

सुख अनुरागों से पक्षपात की उत्पति होती है। देवात्मा सुख अनुराग से विरक्त हो कर जीव या पदार्थ के पक्षपात से पूर्णत: रहित थे।

देवात्मा किसी पदार्थ या जीव के मोह बन्धन में नहीं बन्धे, पूर्णत: विरक्त थे।

देवात्मा अशुभ के शत्रु होकर, किसी अस्तित्व, मनुष्य या पदार्थ के सम्बन्ध में घृणाकारी नहीं बन सके, वह घृणा से पूर्णत: मुक्त थे।

घृणा से मुक्त होने के कारण देवात्मा का किसी के सम्बन्ध में द्वेष, बदले की भावना, ईर्ष्या से पूर्णत: मुक्त रहना भी आवश्यक था। वह नीच भावनाएं शुभ के पूर्ण अनुरागी और पाप के पूर्ण वैरागी के निकट कैसे फटक सकती थी।

ऐसा देव रूप और कहां है? कहीं भी नहीं।

देवात्मा की अपनी वाणी उनके अशुभ बैरागी या पाप के शत्रु रूप के कमाल दर्शन करवाती है :-

1 "मैं अशुभ का शत्रु हूँ, अशुभ (पाप) मेरे द्वारा नष्ट हो।"

2. "देवत्व का जो खमीर मेरे भीतर है, वह पिशाचत्व को गारत करता है, इसलिए वह पिशाचत्व के ज़हर से प्रभावित रूहों के उद्धार और उनकी भलाई का सच्चा माध्यम है।"

3. "पिशाचत्व के समुद्र में डूबती हुई रुहों के लिए मैं जिन्दगी की उमीद का एक जहाज़ हूँ और पिशाचत्व के असरों से गिरी हुई जमायतों वा कौमों को बचाने या उभारने और उच्च बनाने के लिए मिसल एक खमीर के हूँ।"

देश वाणी

"सुश अनुराग चाहे वह किसी प्रकार का भी हो जब किसी मनुष्य को अपना दास बना लेता है, वा यह कहो कि जब कोई मनुष्य उसका दास बन जाता है, तब उसके लिए विविध प्रकार की मिथ्याओं और विविध प्रकार के अहितों वा दुराचारों के पथ पर चलना और विविध प्रकार के अहितों को प्यार करना आवश्यक हो जाता है – आवश्यक हो जाता है, इसलिए मनुष्य जगत में जितनी और जिस प्रकार की मिथ्याओं और जितने और जिस प्रकार के अहितों वा दुराचारों की भरमार है, उतनी और उस उस प्रकार की मिथ्या कहीं भी पशु जगत में देखी नहीं जाती, और उतने और उस प्रकार के दुराचार भी पशु जगत में कहीं पाए नहीं जाते।"

पूर्ण सत्य अनुरागी रूप – 4

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जीवन के विकास के क्रम में, उनकी लगभग साढे 20 वर्ष की उमर में वह मुबारक समय भी आया कि जब उनके भीतर सत्य और मिथ्या के अन्तर के अतिशय निराले बोध जाग्रत हुए और सत्य के प्रति अनुराग और मिथ्या के प्रति घृणा की सर्वोच्च शक्तियां जाग्रत हो गई, जिनसे सारी मानवता खाली वा वंचित थी।

जैसे पहले बताया गया है कि सुख के अनुराग, पाप वा झूठ के स्त्रोत है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य की जाति पाप के साथ साथ झूठ से लिप्त रहती है। मनुष्य चाहे कितना भी महान क्यों न हो, सात्विक हो, धार्मिक संस्थापक हो, उसका जीवन पाप वा झूठ से कुछ न कुछ दागी अवश्य होता है। सुख अनुराग और सत्य का पूर्ण विरोध है। कोई सुख अनुरागी कभी भी सत्य का अनुरागी नहीं हो सकता।

देवात्मा, स्वयं इस सम्बन्ध में फरमाते है : –

"मनुष्य जगत के कराड़ों आत्मा, अपनी गठन के विचार से जिस शोचनीय अवस्था में हैं, उसमें उनके लिए सत्य अनुरागी बनना ही असम्भव है। ऐसे आत्मा की गठन में केवल यही नहीं कि उच्च गति – दायक नाना शक्तियों का पूर्ण अभाव है, बल्कि ऐसी कितनी ही शक्तियां वर्तमान हैं कि जो समय समय में उनके हृदय को सत्य के विरूद्ध असत्य की ओर जाने के लिए प्रबल रूप से प्रेरणा करती हैं। उन शक्तियों के अधीन रहकर, उनके लिए असत्य को चाहना और असत्य परायण बनना अवश्यम्भावी है। जिन जनों के आत्माओं में कल्पना विषयक मानसिक शक्तियों, धन, धरती, मान, प्रशंसा विषयक वासनाओं, दंभ और घमंड विषयक अहं भावों, हिंसा, प्रतिशोध और ईर्ष्या आदि विषयक उतेजनाओं का अधिकार हो, उनकी हृदय भूमि में सत्य अनुराग, उसी प्रकार फूट नहीं सकता, जैसे मूर्गी के अण्डे में से कभी आदमी का बच्चा नहीं निकल सकता। उपरोक्त शक्तियों के अधीन आत्माओं के लिए (करोड़ों ही आत्मा इन शक्तियों के अधीन हैं) असत्य की ओर स्वभाविक आकर्षण होना, जाने या अन्जाने में असत्य बोलना, असत्य को मानना, असत्य का समर्थन और असत्य का प्रचार करना अवश्यक और पक्की बात है।"

उपरोक्त सुख अनुराग का दोष विकास क्रम में देवात्मा के आत्मा से दूर हो गया। देवात्मा किसी भी सुख के या सुख दायक समान या सम्बन्धी के कभी भी बन्दी या अनुरागी नहीं रहे, इसीलिए उनके अद्वितीय आत्मा के भीतर सत्य अनुराग के लासानी भाव के पैदा होने का मार्ग साफ हो गया। मानव समाज में पहली बार सत्य अनुराग की उपज का सामान देवात्मा के भीतर हो गया जिससे इस पृथ्वी पर सत्य के अद्वितीय राज्य का सूत्रपात हो गया।

नेचर में सत्य का पूर्ण आशिक पैदा हो गया। एक ओर विकास क्रम ने मानव हृदय के भावात्मक विकास का नया शिखर छू लिया दूसरी ओर पृथ्वी अपने इस नये श्रृंगार को पाकर सरशार हो उठी, और गर्व से भर गई।

सुख अनुराग के शाप के कारण मनुष्य जगत में उसके निजी जीवन में, सामाजिक और धार्मिक जीवन में झूठ की भरमार है। झूठ ही झूठ का राज्य है, उसका बोल बाला है। आग में से धुएं के निकलने की तरह, सुख अनुरागों में से झूठ का निकलना, नेचर का अटल नियम ही है।

इस सम्बन्ध में गुरु महाराज फरमाते हैं : –

"सत्य का अनुराग न किसी साधारण आत्मा

में पाया जा सकता है और न उसमें वह कभी पैदा हो सकता है। इस विश्व की गठन में जो बात जैसी है उसको मैं वैसा ही जानूं वा वैसा ही बोध और प्रदर्शन करुँ – यह आकांक्षा किसी ऐसे साधारण हृदय के भीतर कैसे पैदा हो सकती है, कि जिसमें एक और झूठ की ओर ले जाने वाली शक्तियां वर्तमान हों और दूसरी ओर झूठ की पैरवी से उसको अपनी नाना वासनाओं और उतेजनाओं की ही तृप्ति मिलती हो और कई प्रकार का संसारिक लाभ होता हो? इसलिए ऐसे असाधारण और विशेष हृदय के बिना कि जिसमें मनुष्य जगत के लाखों वर्षो के विकास क्रम में : –

1. झूठ की ओर ले जाने वाली शक्तियों का अधिकार न हो।

2. आत्मा के अस्तित्व और उसके विकास, विनाश के विषय में पूर्ण विवेक जाग्रत हुआ हो।

3. आत्मा के विकास की पूर्ण अकांक्षा पैदा हुई हो, उसका विकास साधन मुख्य लक्ष्य हो ओर उसके साधन के लिए नाना सात्विक भाव, एक या दूसरे रूप में वर्तमान हों।

4. यह तत्व स्पष्ट से अनुभव होता हो कि विश्वगत प्रत्येक जगत के सम्बन्ध में सत्य और केवल सत्य के अधिक से अधिक ज्ञान और हितकर सत्य की पैरवी के साथ ही हृदय के भीतर जीवन पथ दर्शक ज्योति निरन्तर उत्पन्न वा उन्नत हो सकती है, नहीं तो कदापि किसी आत्मा के भीतर सत्य विषयक पूर्ण अनुराग के उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं हो सकती ।"

सत्य अनुराग के अद्भुत बीज के फूटने के लिए जो हृदय की आवश्यक सामग्री और सामान आवश्यक थे, देवात्मा के भीतर विकास क्रम ने पहली बार प्राप्त करा दिए जिस कारण देवात्मा सत्य अनुराग के अद्वितीय रत्नों जड़े ताज ने सुशोभित होने वाले एक मात्र आत्मा बन गए। आत्मिक घोर अन्धकार के पूर्ण नाश का सामान विकसित हो गया। मानवता के कितने बड़े धन्य भाग्य गुरू महाराज जी के गुरु के इस उपदेश से "झूठ कभी न बोलना, चाहे उससे कितनी ही तकलीफ आए और कितनी ही हानि हो।" गुरू महाराज के भी दूध में खट्टा लगने की तरह सत्य का अंकुर फूट पड़ा जो छोटे छोटे प्रवाह की तरह बहने लगा। सदा वह विकास पाता गया। गुरू महाराज का सत्य अनुराग धीरे धीरे चारों जगतों से जुड़ गया। गुरु महाराज भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत, विशेषकर मनुष्य की आत्मा सम्बन्धी कीमती सत्य ज्ञान प्राप्त करने के अटूट अनुरागी हो गए और यह अनुराग अपने स्वभाव अनुसार बढ़ता गया, विकसित होता गया।

सत्य अनुराग की निराली शक्ति के पैदा हो जाने से गुरु महाराज इस प्रकार की प्रार्थना किया करते थे : –

"जो कुछ सत्य हो, उसको पहचानने की मेरे भीतर योग्यता पैदा हो। मैं उसको जानूं और ग्रहण करुँ और जो कुछ असत्य हो, उसको देखूं और पहचानूं और उसको त्याग करुँ। मेरा प्रत्येक विश्वास सत्य मूलक हो और असत्य मूलक न हो।"

इस सत्य अनुराग की अद्वितीय शक्ति के और विकसित होने से देवात्मा नेचर के सम्बन्ध में अपने ज्ञान को बढ़ाने के साथ साथ, मनुष्यात्मा की हकीकत के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान के प्राप्त करने के लिए अन्तहीन, गहरा और निरन्तर संग्राम करने में जुट गए और आखिरकार वह अपने सत्य अनुराग की विशेष ज्योति में मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में जिन जिन अनोखी सचाईयों का ज्ञान प्राप्त करते गए और उन्हें ग्रहण

करने, उनकी पोषकता करने और उन्हे अपने देव जीवन द्वारा अमली तौर पर जीने और उनका धड़ल्ले से प्रचार करने और इसके लिए हर प्रकार के त्याग के लिए लाचार वा मजबूर हो गए।

मनुष्य अब तक सत्य के प्यार को, सच बोलना ही जानता था, इसलिए सत्य बोलने वाले मनुष्य को सत्यवादी कहा जाता है। सत्य के अनुराग में और आवश्यक अनुराग शक्तियां भी है, जिनके कारण सत्य अनुराग पूर्ण होता है। सत्य, अनुराग आठ महान अनुरागों को लेकर पूर्ण होता है, यह ज्ञान भी मनुष्य को किसी अपने धार्मिक शास्त्र से, पहले प्राप्त नहीं था। यह केवल मात्र देवात्मा के सत्य अनुराग की ही मनुष्य को देन है। सत्य अनुराग निम्नलिखित आठ अनुरागों से विभूषित है : –

1. सत्य भाषण अनुराग
2. सत्य स्पष्ट कथन अनुराग
3. सत्य ज्ञान उपार्जन अनुराग
4. सत्य ग्रहण अनुराग
5. सत्य प्रतिज्ञा पालन अनुराग
6. सत्य प्रचार अनुराग
7. सत्य समर्थन अनुराग
8. धर्म विषयक सत्य खोज अनुराग

सत्य अनुराग का स्वरुप ही मनुष्य पर देवात्मा के अविर्भाव के साथ उज्जवल हो सका है, उससे पहले मानवता, सत्य अनुराग से पूर्णत: अनजान थी।

सत्य अनुराग से विभूषित होकर देवात्मा पूर्ण सत्य स्वरूप हो गए। वह सत्य ही बोलते, सत्य ही ढूंढते और सत्य का ही प्रचार और समर्थन करते थे। सत्य के अतिरिक्त झूठ का किसी कीमत पर भी सहारा नहीं लेते थे। ऐसा सत्य स्वरुप मनुष्य इतिहास ने पहली बार पाया वा देखा है।

देवात्मा सत्य की मूर्ति हैं, वह सच्चाई Personified हैं उनके भीतर सत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं टिकता था और न टिक सकता था। उनके रूप से सत्य झरने की तरह बहता था। सत्य सोचना, सत्य का साथ देना, सत्य को ही फैलाना उनका मिशन था।

ऐसा सत्य स्वरुप अविर्भाव संसार के लिए एक अजूबा था। इश्क और अनुराग सदा नये वाक्य वा साहित्य को जन्म देते हैं। देवात्मा पूर्ण सत्य अनुरागी होकर अद्वितीय गर्जना करने के लिए बेबस थे। ऐसी गर्जना उनसे पहले, कोई गुरु, पीर या धर्म अवतार या धर्म के संस्थापक करने का हौसला नहीं कर सके थे।

उन्होंने फरमाया है : – मैं सत्य का पूर्ण प्रेमी हूँ, सत्य सदा मेरे द्वारा जय लाभ करे, फिर फरमाया है : –

"चाहे हमारा सूर्य, अपनी रोशनी देना छोड़ दे, और चाहे पृथ्वी पैरों के नीचे से निकलकर बिल्कुल चकनाचूर हो जाए परन्तु सत्य का पूर्ण अनुरागी होकर किसी सत्य को जानकर, उसको कभी और किसी सूरत में अपने पैरों से नहीं कुचल सकता।

देवात्मा ने सत्य अनुराग के स्वरूप को इस प्रकार फरमाया है : –

"सत्य विषयक पूर्णाग अनुराग शक्तियों को प्राप्त होकर आत्मा

1. विश्व के नाना विभागों में हितकर ज्ञान का असीम भण्डार भरा हुआ है, उसके साथ जुड़कर जो कुछ सत्य हो, उसके जानने, देखने, ढूंढने और ग्रहण करने की गहरी कामना और उसकी उच्च ज्योति से दिनों दिन, अधिक से अधिक ज्योतिर्मान और सत्य स्वरुप में विकसित होने की योग्यता लाभ करता है।
2. अपनी जीवन पथ प्रदर्शक ज्योति को फैलाकर सत्य का प्रचार और उसकी महिमा स्थापित करता है।

झूठ का पूर्ण शत्रु रूप – 5

जैसे पहले बताया गया है कि नेचर के भीतर विकास का नियम अजूबे पैदा करता है। मानव जगत में उसने देवात्मा को पैदा करके अजूबों का सिरताज अजूबा पैदा किया है। उनके भीतर सुख लालसा के लेशमात्र अधिकार को भी लोप करके उनको सत्य अनुराग की अद्वितीय महा प्रबल शक्ति से सुशोभित कर दिया। सत्य अनुराग के पैदा वा उन्नत होने से उनके भीतर नेचर के अपने अटल नियमानुसार असत्य वैराग्य का पैदा होना स्वभाविक और कुदरती था। सो देवात्मा के भीतर सत्य अनुराग के साथ साथ असत्य वैराग्य, मिथ्या के प्रति, झूठ और कपट के प्रति पूर्ण वैराग्य और विरोध विकसित हो गया। देवात्मा को असत्य वैरागी होने का भी पहली दफा इस पृथ्वी पर फख़र प्राप्त हो गया। असत्य वैराग्य भी अद्वितीय देव शक्ति है और यही नेचर के भीतर मनुष्यता के भीतर, सत्य अनुराग की तरह एक लासानी अजूबा ही है।

समस्त मनुष्य जगत पर सुख लालसाओं का हवा के दवाब की तरह पूर्ण अधिकार है। प्रत्येक मनुष्य सुख लालसाओं का ग्रास है, उनसे मुक्त कोई मनुष्य नहीं है। सुखों के अधिकार ने मनुष्य मात्र को श्राप ग्रस्त बना रखा है। सुखों के अधिकार ने मनुष्य से शुभ भले या हित की ओर जाने की, सत्य और सत्य प्राप्ति की ओर जाने की, या दूसरे शब्दों में पाप से मुक्त होने की, झूठ मिथ्या से निर्मल होने की कुल सामर्थ्य छीन ली है। मनुष्य के लिए शुभ और सत्य के क्षेत्र ही out of bound या पूर्ण वर्जित है, जैसे पशु के लिए शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र पूर्ण वर्जित है।

सुख अनुराग ने मनुष्य की क्या सूरत बनाई हुई है, इसको देवात्मा ने अपनी रोशनी में देखा है, उन्होंने फरमाया है "इन्सान अपने भीतर के नीच अनुरागों और अपने भीतर की नीच घृणाओं के बायस (कारण) तरह तरह के झूठ बोलता है और उनकी पैरवी करता है (1) झूठा (2) मक्कार (3) धोखेबाज़ (4) जालसाज (5) ठग (6) बेवफा (7) बद अहिद (वचन पूरा न करना) (8) फर्ज़ शिकन (कर्तव्यों का घातक) आदि बनता है।

हक़ीकत में सुख अनुरागी मनुष्य का यह वास्तविक रूप है। ऐसी मानव समाज की भीड़ में से, नेचर ने अपने विकास क्रम में शुभ अनुरागी और दूसरी ओर पूर्ण मिथ्या का वैरागी देव मनुष्य प्रगट कर दिया, जो एक ओर पूर्ण सत्य अनुरागी, दूसरी ओर मिथ्या का पूर्ण वैरागी है। जो सत्य का पूर्ण आशिक और झूठ का पक्का दुश्मन है।

नेचर ने, ऐसा अद्वितीय सत्य स्वरुप और असत्य का दुश्मन पैदा करके अपना पूर्ण कमाल दिखा दिया। सारी पृथ्वी ही उपरोक्त देव शक्तियों के श्रृंगार को पाकर अनोखी शान से दमक उठी। मानव जगत के साथ साथ पशु जगत या वनस्पति जगत के सौभाग्य के भी द्वारा खुल गए।

झूठ, मिथ्या, कपटता, ठगी, धोखे की मिट्टी के कीट मानव को, एक अद्वितीय, झूठ और मिथ्या का पूर्ण शत्रु, अपना सच्चा बचावनहार और रक्षक और त्राता प्राप्त हो गया। आह! मनुष्य मात्र के कितने बड़े सौभाग्य!

देवात्मा के आत्मा के भीतर असत्य या झूठ या मिथ्या गप्पों के प्रति गहरी घृणा का ज़ोरदार, उन्नतशील, असत्य वैराग्य पैदा हो गया। वह समय के साथ साथ लगातार विकसित होता गया। यह वैराग्य शक्ति अपनी उन्नति के साथ उसके आत्मा पर अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करती गई। नेचर के चारों

जगतों के सम्बन्ध में जो जो बात झूठी या गल्त प्रतीत होती गई, वह उसके लिए घृणा से भरते गए, उनके लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपने इस अनुराग की तरक्की के साथ साथ अपने बचपन से प्राप्त हुए प्रत्येक गल्त या झूठे विश्वास को एक दम त्याग दें। उनके लिए यह भी आवश्यक हो गया है कि वह जिस किसी धार्मिक सम्प्रदाय के जिन जिन झूठे विश्वासों या साधनों या गतियों का ज्ञान प्राप्त करें तो उनके ऐसे कुल झूठे विश्वासों और साधनों के विरुद्ध अपनी तरफ से जोरदार घृणा की आवाज बुलन्द करें और उसे घिनौने रूप में प्रगट करें, बेशक ऐसे झूठों की हिदायत किसी ऋषि, मुनि, पीर पैगम्बर, गुरु या किसी देवता की ओर से बताई गई हो, चाहे किसी और की तरफ से।

उनके लिए यह भी आवश्यक हो गया कि ऐसे सब प्रकार के झूठे विश्वासों और मिथ्या मूलक साधनों से अधिकारी जनों को सच्ची शुद्धि और निजात दें, अपने ऐसे अथाह संग्राम से उन्हे झूठ के अन्धे अनुरागियों, पक्षपातियों की ओर से दुर्व्यवहार, तिरस्कार, निन्दा आदि असह्य कष्ट और दुख मिलें, उनके झूठे इलज़ामों से उनके हमलों से उनके दिल पर सख्त और भारी हमले हों और उन्हें जां–कंदनी में से गुज़रना पड़े, या जान लेवा रोगों का शिकार होना पड़े, माल और मान की हानि हो, उसको वह पूरी हिम्मत के साथ सहन करें, उस कुल दुख, कष्ट, हानि और मुसीबत की आग में से गुज़रकर मिथ्या के पूर्ण शत्रु और सत्य के पूरे आशिक और वफादार रहें, झूठ के साथ जंग करने से कभी और किसी सूरत में कभी एक इंच भी पीछे न हटें, अपने ऐसे पूरे और अद्वितीय त्याग और आत्मबल से झूठ के साथियों और पक्षपातियों के ऊपर सदा फतह और अधिक से अधिक विजय प्राप्त करें।

सारी मानवता एक खूंटे से बन्धी हुई है। वह सुख से जरा भी परे नहीं हट सकती। मनुष्य सुख का व्यापारी है, वह सदा सुख दुख का हिसाब लगाकर चलता है। मनुष्य कोई ऐसी भलाई नहीं कर सकता है कि जिस भलाई के करने से, उसे कोई सुख न मिलता हो या किसी सुख प्राप्ति की इच्छा न हो, वह किसी ऐसी सच्चाई का साथ नहीं दे सकता जिस सच्चाई की पैरवी से उसे कोई सुख न मिलता हो या सुख की आशा न हो। वाह! कमाल हो गया! नेचर ने देवात्मा को सुख दुख की आशा से असंख्य गुणा ऊपर उठा दिया।

केवल देवात्मा ही ऐसे सच्चे देव है, जो सत्य और हित अनुराग की पैरवी में सुख दुख का कोई हिसाब नहीं लगाते। वह इस Calculation से ऊपर है। वह केवल सब प्रकार के सत्य और शुभ के आशिक हैं। कोई भी आशिक हिसाब किताब नहीं जानता, देवात्मा तो आशिक ही निराले और अनोखे थे – सत्य और शुभ के आशिक।

देवात्मा फरमाते है : –

"जैसे एक एक पक्का जुएबाज़ या शराबी अपनी सारी दौलत और जायदाद खोकर और अति नंग, कंगाल होकर, दर दर का भिखारी बनकर भी जुआ खेलने से नहीं रुकता, उसी प्रकार मैं सत्य और हित विषयक जिन जिन अनुरागों के अधीन हो चुका था और उनके विरूद्ध जिस प्रकार के पूर्ण वैराग्य के भाव रखता था, उनके द्वारा प्रेरित होकर सब कुछ खोने और ऊपर सब प्रकार के दुख लेने के लिए मजबूर था।"

सच्चे आशिक कभी वफ़ा को दाग नहीं लगने देते। देवात्मा सर्व्वोच्च कोटि के आशिक थे।

देवात्मा के भीतर असत्य के प्रति पूर्ण घृणा के साथ, मानव जगत में उसके विश्वासों, और धर्मो में से, उसकी पूजा पाठ में से, उसके सम्बन्धों और व्यवहारों में से, झूठ के मूल नाश करने के लिए, नेचर के भी यह अदभुत अनुराग एक नये और अदभुत युग के ही सूचक हैं।

साधारण मनुष्य की समझ के अनुसार, झूठ के प्रति घृणा या शत्रुता, झूठ बोलने के प्रति घृणा या शत्रुता ही समझी जाती है, झूठ का कोई और व्यवहार भी होता है और करता है, यह ज्ञान मनुष्य की सोच से ऊपर है। झूठ के कौन कौन से भयानक पक्ष हैं और उनके प्रति घोर घृणा के बाद, झूठ के प्रति नफरत और शत्रुता नहीं हो सकती। गुरु महाराज के भीतर झूठ के आठ भयानक पक्षों के प्रति घोर घृणा या तुफान वर्तमान था, वह झूठ सूचक तिनका भर मामूली इशारे मात्र को भी सहन नहीं कर सकते थे, उनका सारा खून खौलने लगता था।

देवात्मा के भीतर असत्य सम्बन्धी जिन नाना अति बलशाली वैराग्य शक्तियों का विकास हुआ वह यह हैं : –

* मिथ्या कथन विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* मिथ्या प्रतिज्ञा विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* मिथ्या ग्रहण विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* असरलता विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* असत्य – जन्य अंधता विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* असत्य – जन्य प्रत्येक सुख विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति
* असत्य – जन्य प्रत्येक लाभ विषयक पूर्ण वैराग्य शक्ति

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपनी असत्य विषयक पूर्ण वैराग्य शक्तियों के स्वरूप के सम्बन्ध में इस प्रकार फरमाया है : –

"असत्य विषयक पूर्णाग वैराग्य शक्तियों को प्राप्त होकर आत्मा

1. विश्व के प्रत्येक विभाग के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने में जो कुछ असत्य या मिथ्या प्रतीत हो, उसके त्याग की पूर्ण आकांक्षा और सामर्थ्य लाभ करता है और जो कुछ असत्य वा मिथ्या जानता है, उसको कभी और किसी प्रकार आश्रय देकर, अपनी जीवन पथ, आन्तरिक ज्योति और अपने जीवन के उच्च पथ से अन्ध और भ्रष्ट होना नहीं चाहता।
2. जहां तक जीवन विषयक सत्य ज्ञान की ज्योति फैलाकर असत्य ग्रस्त लोगों का उद्धार कर सकता है, वहां तक उनके उद्धार के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार यत्न और संग्राम करता है।"

देवात्मा के वह देव प्रभाव जो उनके चारों तरफ लहरों के रूप में आकाश में फैलते रहते हैं, जब अनुकूल दशा के तैयार हो जाने पर किसी के हृदय में घुसने और उसको हिलाने का अवसर पाते हैं, तो उनके द्वारा एक – एक पापी जन का हृदय भी इतना हिलने लगता है कि वह अपने सालों के छुपे हुए एक एक प्रिय पाप को न केवल बुरे और कुत्सित रूप में देखने लगता है, बल्कि उसके घमंड की रोकों को तोड़कर और उसको प्रगट करके रोशनी में लाने के लिए मजबूर कर देता है।

याद रखो कि आत्मिक हानि से बढ़कर क्या इस लोक और क्या किसी और लोक में मनुष्य के लिए कोई और हानि नहीं हो सकती।

(देवात्मा)

आत्मिक ज्योति के यक्ता सूर्य – 6

विकास का नियम पूर्णत: सत्य हैं, यही नियम विश्व में क्रिश्मों की एक मात्र जननी है। विकास के नियम ने हमारा सूर्य और सूर्यमण्डल पैदा किया है, इसने हमारी पृथ्वी, हवा, आक्सीजन पैदा किए हैं। इसी ने जीव, पौधे, पशु, पक्षी और सइंसान पैदा किए हैं। इन्सानों के विकास क्रम में बलि, विज्ञानी और सात्विक उपलब्धी मानव सोच को सही दिशा देती है और मनुष्य को मिथ्या, भ्रमों और कल्पना मूलक बातों की गहरी खाई में गिरने से बचाती है।

रोशनी सम्बन्धी मानव को धीरे धीरे जानकारी प्राप्त हुई, उसने सबसे पहले भौतिक रोशनी का ज्ञान प्राप्त हुआ, फिर मान्सिक रोशनी का पता लगा। इससे आगे उसको सात्विक ज्योति का विशेष ज्ञान नहीं, इससे बढ़कर किसी रोशनी का ज्ञान तो क्या होना था। सर्वोच्च ज्योति, जिसके विषय में मानव जाति पूर्ण रूप में अंधेरे में है, जो महा हितकर वा निराली रोशनी है इस ज्योति के विषय में नाम मात्र भी ज्ञान नहीं। और न कोई विश्वास है और न हो सकता है। मनुष्य की ऐसी सोच होनी है भी अवश्यक, जैसे आंखों से पहले भौतिक रोशनी का, विद्या से पहले मानसिक ज्योति का और सात्विकता से पहले सात्विक ज्योति का आभास असम्भव था, उसी प्रकार आत्मिक ज्योति का आत्मिक होश की अवर्तमानता में कोई आभास न होना स्वभाविक है और आवश्यक है।

रोशनी सदा शक्तियों की भरसक प्रगति से उत्पन्न होती है। सूर्य अर्थात् भौतिक रोशनी भौतिक शक्तियों से, दिमागी रोशनी, दिमागी शक्तियों से, सात्विक रोशनी सात्विक शक्तियों से, आत्मिक रोशनी, शुभ और सत्य के प्रति अनुराग की शक्तियों से पैदा होती है। जैसे पौधे, पशु और मनुष्यों के अस्तित्व सत्य हैं, कोई कल्पित वा वहम की बात नहीं है, उसी प्रकार देवात्मा का अस्तित्व पूर्ण सत्य है, कोई वहम या कल्पना की बात नहीं। देवात्मा के भीतर सत्य अनुराग और शुभ अनुराग सत्य है, उन अनुरागों से उपजी ज्योति, आत्मिक ज्योति या देव ज्योति सत्य है। जैसे सूर्य वा उसकी ज्योति सत्य है, उसी प्रकार देवात्मा की ज्योति सत्य है।

देवात्मा की रोशनी ने देवात्मा के ऊपर एक नया संसार प्रगट किया है जो आज तक मानव से छुपा पड़ा था। देवात्मा की रोशनी ने मानव सोच और ज्ञान मे नयी क्रान्ति लाने वाले सत्य प्रगट किए है। देवात्मा ने पहले यह सत्य देखा कि धर्म जगत में यह माना जाना या विश्वास होना कि केवल ईश्वर सत्य है, और जगत मिथ्या है, बिल्कुल ठीक नहीं है, परन्तु ठोस सच्चाई यह है कि केवल विश्व या संसार सत्य है, ईश्वर या और आप्रकृतिक अस्तित्व सब मिथ्या हैं। विश्व अविनाशी है, सदा से है, स्वम्भू है। इसका बनाने वा चलाने वाला कोई नहीं। विश्व स्वैचालिक है। इसका विश्व की अपनी शक्तियां चलाती हैं। मनुष्य को ईश्वर नहीं चलाता। मनुष्य को मनुष्य की शक्तियां चलाती हैं, कोई गायबी शक्तियां नहीं चलाती। देवात्मा ने यह सत्य देखा और प्रगट किया, मनुष्य को चलाने वाली शक्तियां उसकी भाव शक्तियां है।

देवात्मा ने अपनी रोशनी में देखा है कि मनुष्य के अस्तित्व में, उसकी मुख्य और सार वस्तु आत्मा है। उसके होने से मनुष्य जीवन की लीला है। मनुष्य के कुल सुधार की या बिगाड़ की जड़ उसके आत्मा में है।

देव ज्योति की सराहना इसलिए है कि उसने आत्मा के जगत का अंधकार दूर किया है। आत्मा के अस्त्तित्व को रोशन किया है, जो आज तक कोई नहीं कर सका और न रोशनी के बिना ऐसा कोई कर सकता है।

धार्मिक लोगों ने आत्मा का नाम तो लिया है,

उसके स्वरूप के सम्बंध में सच्ची और राई भर भी जानकारी नहीं है। जैसे परमात्मा की तरह आत्मा की परिभाषा भी पूर्णता मिथ्या दी गई है। उसको ईश्वर या ब्रह्म का अंश या स्वरूप बताया गया है। उसको मुख्य या सार वस्तु नहीं बताया गया।

जैसे Medical Science ने मनुष्य के शरीर का सत्य ज्ञान रोशन किया है, उसी प्रकार देवात्मा की नई वा अद्भुत देव ज्योति में आत्मा का विज्ञान मूलक देवरूप रोशन किया है: –

1. मनुष्य की जीवनी शक्ति (Life Force) ही मनुष्य का आत्मा है।
2. इस आत्मा का जन्म होता है।
3. आत्मा अपने बल के Function से बढ़ती है।
4. आत्मा का शरीर की तरह एक सार अस्तित्व है।
5. उसकी स्वरूप और बनावट है।
6. आत्मा विश्व के नियमों को उसी प्रकार अधीन है, जिस प्रकार शरीर।
7. आत्मा सदा बदलता है।
8. आत्मा का पतन होता है, आत्मा का विकास भी होता है।
9. आत्मा के रोग हैं। आत्मा स्वास्थ्य भी बनता है।
10. आत्मा का विकास भी है और नाश भी है।

जिस प्रकार देवात्मा के आत्मा के रूप को तार तार करके रोशन किया हैं, उस प्रकार अधयात्मिक ज्योति से खाली कोई भी वजूद नहीं कर सका। आत्मा का स्वरूप समझने के लिए मानव जगत देवात्मा का मुहताज है।

देवात्मा की रोशनी से पहले आत्मा को निर्लेप समझा जाता था। आत्मा की हानि की मनुष्य को कुछ भी सोझी नहीं थी। देवात्मा की रोशनी ने आत्मा का जगत रोशन कर दिया, जो मनुष्य के लिए सदा से ही अलोप था और आज भी है। देवात्मा की रोशनी ही मनुष्य को आत्मा की हानि का बोध कराती है। आत्मा की सबसे बढ़कर हानि करने वाली शक्तियों का बोध करवाती है। आत्मा के परिवर्तन का बोध करवाती है। महा घातक अहं का बोध करवाती है। देवात्त्मा की रोशनी से पहले ब्रह्म ज्ञानी का शब्द नहीं आया। आत्म बोध के शब्द देवात्मा की रोशनी से पहले संसार के किसी धर्म शास्त्र में नहीं आए। आत्मा का बोध देवात्मा की रोशनी के बिना न पैदा होता है, न कायम रह सकता है और न उन्नत हो सकता है।

अहं या अहंकार का शब्द पुरातन युग से धार्मिक ग्रन्थों में आ रहा हैं। पांच भूत पदार्थो की तरह पांच हानिकारक बातों का आविष्कार भी हुआ है। वह हैं: – काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनमें से पिछले चारों के विषय में विज्ञान मूलक जानकारी नहीं है। वह क्यों पैदा होते हैं? वह कैसे बढ़ते हैं। उनका भयानक रूप क्या है? इसके विषय में कोई ज्ञान नहीं मिलता। वास्तव में अहं क्या भयानक चीज है, इसका देवात्मा की रोशनी के बिना कोई ज्ञान नहीं था। क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तो मनुष्य के नीच भावों की सेवा के सिपाही हैं।

अहं अनुराग जो मनुष्य के लिए महाघातक शक्ति है, उसका बोध, अहं की उपज, उसके कारण, उसका बढ़ना, उसके बढ़ने के भयानक फलों की देवात्मा की रोशनी के बिना कोई नहीं रोशन कर सकता।

अहं का बोध मनुष्य के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है, उसके लिए मनुष्य सदा सदा इस अद्भुत और नई ज्योति का मोहताज है।

देवात्मा की रोशनी ने ही मनुष्य की प्राकृत हालत या उसके सही स्वरूप से ढक्कन उतारा। उन्होंने ही अपनी रोशनी में यह रोशन किया कि मनुष्य ब्रह्म स्वरूप, Flame of Divinity, वा जोत स्वरूप नहीं बल्कि सुख स्वरूप, पाप और झूठ का बंधुवा है, गुलाम

है, पाप और झूठ के लेश से कोई मनुष्य मुक्त नहीं। डिगरियों का अंतर है। मनुष्य का सही स्वरूप देवात्मा ने रोशन कर दिया। मनुष्य के अपने सुधार वा समाज के सुधार का आधार, उसकी अपनी नीचता के प्रति जाग्रति और बोध है। मनुष्य को अपने स्वरूप को जानने का कोई साधन नहीं। सात्विक प्रकृति रखने वाले कुछ जनों को किसी किसी पक्ष में कुछ अंश तक अपनी नीचता नज़र आती है, परन्तु साधारणत: सारा मानव जगत अपनी दुर्बलताओं, अपनी अयोग्यताओं के देखने में असक्षम है। मनुष्य का अपनी नीचता और दुर्बलता की ओर ध्यान करने, अपनी कमियों, अपने अपराध को देखने का कोई मांग दिखाने वाला नहीं था, और न ही आज है। कोई वाणी, कोई पाप, कोई पूजा, कोई भी धर्म साधन मनुष्य का ध्यान उसके अपनी तरफ नहीं फेर सकता। केवल और केवल देव ज्योति के भीतर ही यह क्षमता है कि वह मनुष्य का ध्यान उसके अपने तरफ फेर सकती है। उसकी योग्यता के अनुसार यह ज्योति मनुष्य की नीचता और उसके भयानक रूप को दिखाती है। अपना सही स्वरूप, अपने सही आत्मिक रोग, अपनी सही नीचता, अपनी सही विनाश परायणता को देखने के लिए मनुष्य सदा सदा के लिए देव ज्योति के सूर्य देवात्मा का मोहताज है।

मानव जगत का वास्तव विकास, और सब ज्ञान की तुलना में अपनी नीचता के ज्ञान पर आधारित है। यह ज्ञान देव ज्योति के बिना असम्भव था और है। इसीलिए मानव समाज का नैतिक और अध्यात्मिक मूल्यों में विकास रुका हुआ है। जैसे जैसे मनुष्य देव ज्योति पाने के योग्य होता जाएगा, त्यों त्यों उसे वास्तविक विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

देवात्मा का आर्विभाव इस युग की महानतम, सबसे हितकर, सबसे अद्‌भुत और विचित्र घटना है। देवात्मा को पहचानना और उनके साथ सम्बन्धित होना मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है और उनको न पहचानना और उनके साथ सम्बन्धित न होना मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। देवात्मा के आद्वतिय आर्विभाव के साथ सारी मानव समाज और सारे जगतों का विकास जुड़ा हुआ है।

इसलिए देवात्मा को जानना और उनके साथ सम्बन्धित होना अति आवश्यक है।

देवात्मा को जानते तो हम हैं, उनके मिशन के साथ जुड़े हुए भी हैं, परन्तु उनको पहचानता कोई नहीं, कोई विरला ही इस सौभाग्य को प्राप्त करता है। देवात्मा के वास्तविक रूप को किसी अंश केवल वही जन पहचान सकते है जो निरन्तर, यथेष्ट मात्रा में उनकी देव ज्योति को पाने के अधिकारी हो चुके है। जिनको यह अधिकार प्राप्त नहीं वह नेचर की इस सर्वोच्च देन को पहचान नहीं सकते। इसलिए देवात्मा से दूर रहकर, जीवन की बाजी हारकर मनुष्य इस संसार में (उनकी शरण पाकर भी) बेबस रहेगा।

मनुष्य, देवात्मा के सत्य स्वरूप, उनका मिथ्या का शत्रु रूप उनके शुभ स्वरूप और पिशाचित के शत्रु, लासानी त्यागी, असहाय दुख भोगी रूप, उनके देव ज्योति, देव तेज के दाता सूरज रूप को न किसी अंश पहचान सकेगा और न ही दुर्लभ सर्वोच्च रुहानी बरकतों का भागी बन सकेगा।

अपना बोध और देवात्मा की पहचान दो बहुमूल्य और परम आवश्यक लाभ की वस्तुएं हैं। यह मानव जीवन का लक्ष्य है। Know thyself and know dev Atma देवात्मा की ज्योति उक्त दोनों बातों का ही ज्ञान देती है, जो और कहीं प्राप्त नहीं हो सकता।

मानवता के महा सौभाग्य कि आत्मिक ज्योति के अद्‌भुत और निराले सूर्य प्रगट हो गए हैं। मानव जगत उनके इस रूहानी रूप को अधिक से अधिक निहार सकें और सर्वोच्च बरकतों से मालामाल हो सकें।

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

वीरवार 24 दिसम्बर 2015

प्रवेश सभा – 4.30 बजे सायं

शुक्रवार 25 दिसम्बर 2015

1– पहली सभा – 9.30 बजे प्रात:

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2 – पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

3 – संगीत सभा 7.30 बजे सायं

शनिवार 26 दिसम्बर 2015 (महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रात:

1– पहली सभा 9.00 बजे प्रात:

विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।

2 – दूसरी सभा – 2.00 बजे दोपहर – बच्चों की सभा और कुछ भजन।

3 – पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

4 – दीप माला – 6.00 बजे सायं

5 – आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर भी दे सकते हैं)

रविवार 27 दिसम्बर 2015

1– पहली सभा – 9.00 बजे प्रात:
सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2 – भाव प्रकाश

3 – देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :–

1. कृपया सेवक – सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।
4. अपने आने की सूचना, संख्या समेत, पहले देने की कृपा करें।

फोन : 0172 – 2716914, 9815531038, 9463836617

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts